हिंदी भाषा और साहित्य
भारतीय संस्कृति
समाज विज्ञान
राष्ट्र और उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श
मानवाधिकार
मीडिया
आलोचना के बीज शब्द
पौराणिक चरित्र
पर्यावरण
पश्चिमी सिद्धांतकार
भारत के राज्य
कलाओं का संसार

1

अनुवाद सिद्धांत
नवजागरण और सुधारवादी आंदोलन
वैश्वीकरण और उपभोक्ता संस्कृति

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश

प्रधान संपादक

शंभुनाथ

संपादक मंडल

राधावल्लभ त्रिपाठी, जवरीमल्ल पारख
अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह
अवधेश प्रसाद सिंह

भाषा संपादक

राजकिशोर

संयोजन

कुसुम खेमानी

Scanned with CamScanner

एकमात्र वितरक

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

HINDI SAHITYA JNANKOSH-1
Chief Editor : Shambhunath

ISBN : 978-81-940882-1-9
Kosh

© 2019 भारतीय भाषा परिषद

प्रथम संस्करण

सात खंडों का सम्पूर्ण सेट (पेपरबैक संस्करण) : ₹ 2000

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सन्मार्ग प्रा.लि., कोलकाता में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

Scanned with CamScanner

उन्होंने कप्तान को धमकाया कि अगर वह नहीं चले जाते तो वह कत्ल के भी मुकदमे में फंसने को तैयार हैं। कप्तान साहब को खाली हाथ लौटना पड़ा और अशफाकउल्ला को फांसी की सजा सुना दी गई।

जज ने फैसले में लिखा था कि अभियुक्त ने व्यक्तिगत लाभ के लिए अपराध नहीं किया था, इसलिए माफी मांग लेने पर उनकी सजा कम की जा सकती है। अशफाक और रामप्रसाद बिस्मिल के मिलने का प्रबंध किया गया। इन लोगों ने तय किया कि माफी मांग लेने पर सात साल में छूट जाने का प्रबंध है और उसके बाद वे और भी बड़े कारनामे करने को स्वतंत्र हो जाएंगे। इस तरह दोनों ने माफीनामा दायर कर दिया। इस बीच उन्हें छुड़ाने के प्रयास होते रहे। गोविंद वल्लभ पंत और सी वाई चिंतामणि जैसे विख्यात नेताओं ने भी उन्हें छुड़ाने का प्रयास किया। पर सरकार ने फैसला किया कि ये लोग खतरनाक मुजरिम हैं और इन्हें जिंदा छोड़ना सरकार के लिए बड़ी मुश्किलें पैदा कर सकता है। इसलिए इन्हें मौत की ही सजा दी जानी चाहिए। इस बीच लंदन के प्रिवी कौंसिल में भी दया की अपील की जा चुकी थी। वहां भी उसे खारिज कर दिया गया।

15 दिसंबर 1927 को फैजाबाद जेल की काल कोठरी से अशफाकउल्ला खाँ ने 'कौम के नाम पैगाम' भेजा। इसमें उन्होंने खास तौर से मुसलमानों को आगाह किया कि वे सरकार द्वारा हिंदू और मुसलमानों को बांटने की कोशिशों से बचें। आखिर में उन्होंने लिखा : 'मेरे भाइयो, मेरा सलाम लो और जो काम हमसे रह गया है उस अधूरे काम को तुम पूरा करना।'

अंत में उन्होंने अंग्रेजी की कविता की कुछ पंक्तियां लिखी थीं जिनका अर्थ था कि धरती पर आए हर व्यक्ति को एक न एक दिन मरना है, इससे अच्छी मौत क्या होगी कि वह अपनी विरासत की रक्षा करते हुए मरे।

19 दिसंबर 1927 को अशफाकउल्ला ने सुबह तैयार होकर कुरआन की कुछ आयतें पढ़ीं और फांसी के तख्ते पर चढ़कर फांसी का फंदा खुद ही गले में डाल लिया। जब उनकी लाश फैजाबाद से शाहजहांपुर लाई जा रही थी तो लखनऊ स्टेशन पर बीमार गणेश शंकर विद्यार्थी ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। उनकी लाश उनके पुश्तैनी घर के सामने दफना दी गई। उनकी मजार पर उनका ही एक शेर लिखा है–'जिंदगी बादे-फना तुझको मिलेगी 'हसरत'/तेरा जीना तेरे मरने की बदौलत होगा।'

लाल बहादुर वर्मा

अशोक

(तीसरी सदी ईसा पूर्व)

भारतीय इतिहास में अशोक का व्यक्तित्व ऐसा है, जिसका प्रभाव हर जगह पाया जाता है। अशोक के शिलालेख उसे एक महान सम्राट के पद पर सुशोभित करते हैं। उसके व्यक्तित्व के बारे में बौद्ध ग्रंथों में काफी कुछ कहा गया है। वह मौर्य साम्राज्य के निर्माता चंद्रगुप्त मौर्य का पौत्र तथा बिंदुसार का पुत्र था, जिसे चंद्रगुप्त द्वारा निर्मित विशाल साम्राज्य उत्तराधिकार में मिला था, जिसमें कलिंग और सुदूर दक्षिण के कुछ अंश को छोड़कर सारा भारतवर्ष सम्मिलित था। उसका राज्यकाल संभवत: 268 ईसा पूर्व में आरंभ हुआ। अपने विशाल साम्राज्य में कलिंग को सम्मिलित करने के लिए अशोक को एक भयंकर युद्ध लड़ना पड़ा, जिसमें उसे जीत हासिल हुई, लेकिन इसके नर-संहार ने उसे मानसिक स्तर पर बेहद विक्षुब्ध कर दिया। इसका विस्तृत उल्लेख उसके शिलालेखों में मिलता है। अशोक को 'चंडाशोक', 'कालाशोक', 'प्रियदर्शी', 'देवानांप्रिय' जैसे विशेषणों से नवाजा गया है। वस्तुत: उसका नाम अशोकवर्धन था।

बिंदुसार के कहने पर आजीवक आचार्य पिंगलवत्स ने राजा के पुत्रों की परीक्षा ली तो उन्होंने अशोक को सर्वाधिक योग्य पाया। वह ब्राह्मी, खरोष्ठी लिपियों सहित कई भाषाओं का जानकार था। प्रेम और वीरता मानो उसकी रग-रग में भरे थे। वह न केवल कौतूहल-प्रेमी किशोर था, प्रणय-सुगंध का भौंरा भी था। वह साम्राज्य विस्तार का दुर्दांत सैनिक-

Scanned with CamScanner

कश्मीर में श्रीनगर नाम से नगर बनवाए। अपने पितामह द्वारा निर्मित पाटलिपुत्र के राजमहल को उसने विस्तार देकर इतना भव्य और आकर्षक रूप प्रदान कर दिया था कि उसे देखकर फाह्यान ने कहा था, 'जरूर इसे देवदूतों ने बनाया होगा।' अशोक ने अनेक स्तूपों, दरीगृहों और विहारों का निर्माण कराया था, जिनकी दीवारें और छतें शीशे की तरह चमका करती थीं। उस काल की वास्तुकला का सबसे उत्कृष्ट नमूना वे स्तंभ हैं जो ऊपर पतले और नीचे से मोटे हैं। सबसे महत्वपूर्ण वह स्तंभ है, जो अशोक स्तंभ के नाम से आज भी स्वाधीन भारत के राष्ट्र ध्वज में अंकित है।

अशोक के राज्यादेशों में कल्याणकारी एवं धर्मनिरपेक्ष राज्य के कुछ महान आदर्श सूत्र रूप में मौजूद हैं जैसे—1. विविध संप्रदायों के जनगण के बीच एकता के लिए आवश्यक है—'वाति गुनी' अर्थात वाणी का संयम। दूसरे संप्रदाय की आलोचना और अपने संप्रदाय की प्रशंसा करते हुए शब्दों पर नियंत्रण रखा जाए, 2. 'बहुश्रुत' अर्थात अपने अतिरिक्त अन्य धर्मों के बारे में जानकारी हासिल की जाए, 3. 'राजा के दान में सबका अधिकार होगा', अर्थात राष्ट्रीय कोष में सांप्रदायिक भेदभाव नहीं हो और 4. 'व्यवहार समता और दंड समता का पालन' अर्थात व्यवहार और दंड में सबके साथ समता का बर्ताव किया जाएगा। इस अंतिम राजादेश को 'भारतीय शासन का सुवर्ण पट्ट' कहते हुए वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है, 'अपनी इस आज्ञा में अशोक जिस ऊंचाई पर उठा है, उस ऊंचाई को भारतीय राज परंपरा में और कोई प्राप्त नहीं कर सका।'

अशोक के संदर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार रमेशचंद्र मजूमदार का कथन है, 'साम्राज्य तो उठते-गिरते रहे हैं, लेकिन अशोक के माध्यम से भारत की नैतिक विजय को जो गौरव प्राप्त हुआ है, उसकी दीप्ति दो हजार साल से अधिक समय व्यतीत हो जाने पर भी धुंधली नहीं हुई है।' यही कारण है कि हिंदी सहित लगभग सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में जिन ऐतिहासिक व्यक्तियों को सर्वाधिक स्थान मिला है, अशोक उनमें एक हैं। जयशंकर प्रसाद की कविता 'अशोक की चिंता', रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'पाटलिपुत्र की गंगा', भवानी प्रसाद मिश्र के खंड काव्य 'कालजयी', यशपाल के उपन्यास 'अमिता' और अज्ञेय के काव्य-नाटक 'उत्तर प्रियदर्शी' की रचना सम्राट अशोक के जीवन की घटनाओं पर आधारित है। 'उत्तर प्रियदर्शी' में अज्ञेय ने उस मनोवैज्ञानिक संबंध सूत्र को खोजने का प्रयास किया है, जो अशोक के नरक-निर्माण, कलिंग विजय, दर्पस्फीत अहंता और उसके मोह-भंग के बीच रहा होगा और जिसके विषय में इतिहास मौन है। श्रीकांत वर्मा ने सम्राट अशोक के ऐतिहासिक चरित्र के बहाने अपनी 'कलिंग' जैसी महत्वपूर्ण कविता में मनुष्य की विवशता, दर्प और मोहभंग को बेधक दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

जयकौशल

अश्लीलता

अश्लील शब्द के कई अर्थ लगाए जाते हैं गंदा, फूहड़, भद्दा, ग्राम्य। ऋग्वेद में प्रयुक्त 'अश्रूं' का अर्थ सायण ने दिया है, अश्लील, गुणहीन और कुत्सित। भारत की काव्यशास्त्रीय परंपरा में 'अश्लीलता' एक काव्य दोष है, जो कविता में लज्जाजनक अर्थबोध का सूचक है। अश्लील के लिए अंग्रेजी में 'ऑब्सीन' और 'वल्गर' शब्दों का प्रयोग होता है।

कानून की दृष्टि से अश्लीलता एक अपराध है। इसलिए अश्लीलता की रोकथाम के लिए नियम-कानून बनाए गए हैं। साहित्य में इकहरे नियम-कानून का विरोध करते हुए इस पर तीखी बहस हुई है कि अश्लीलता क्या है और क्या नहीं है। अब यह सर्वमान्य है कि इसकी कोई शाश्वत परिभाषा नहीं दी जा सकती। देश-काल के अनुसार अश्लीलता के मापदंड अलग होते हैं। भारत में ही 'कामसूत्र' के रचनाकार वात्स्यायन 'आचार्य' कहलाए

Scanned with CamScanner

राजनीति को समझने का यह एक प्रचलित तरीका है कि उन अभिजनों का अध्ययन किया जाए जिनके पास समाज के विभिन्न क्षेत्रों के संचालन के लिए निर्णय लेने के अधिकार रहे हैं। बीसवीं सदी की शुरुआत में इतालवी समाजशास्त्रियों गेटानो मोस्का और विल्फ्रेदो परेटो के साथ-साथ मोस्का के जर्मन अनुयायी रॉबर्ट मिशेल्स ने लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के विकास के खिलाफ प्रतिक्रिया करते हुए दावा किया कि अभिजनों का शासन मानवीय इतिहास का एक प्रमुख लक्षण है। यह सूत्रीकरण उन्नीसवीं सदी में मार्क्सवाद द्वारा प्रवर्तित और पुष्ट समतामूलक सिद्धांतों के खिलाफ था। हालांकि इन विद्वानों ने आग्रहपूर्वक कहा कि उनका समाज-विज्ञान किसी मूल्य से बंधा हुआ नहीं है, पर इटली में उभरते हुए फासीवाद के प्रति उनकी हमदर्दी किसी से छिपी हुई नहीं थी। परेटो और मिशेल्स तो सीधे-सीधे फासीवाद के समर्थक थे। कुल मिला कर इन तीनों सिद्धांतकारों की कोशिश थी कि संसदीय व्यवस्था केवल उच्च और मध्यवर्ग की भागीदारी तक ही सीमित रहनी चाहिए। वे मजदूरों और किसानों के प्रतिनिधित्व वाली संसद को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे।

मार्क्सवादी सिद्धांतकारों और लोकतांत्रिक बहुलतावाद के पैरोकारों ने एलीटवाद या अभिजनवाद को कड़ी चुनौती दी। मार्क्सवादियों ने कहा कि यह सिद्धांत अभिजनों के प्रभुत्व के बुनियादी आधार की शिनाख्त करने में नाकाम रहा है। दूसरी ओर, बहुलतावादियों का तर्क था कि आधुनिक, विकसित और उदारवादी समाजों में सत्ता और प्रभुत्व के लिए विविध हितों के बीच प्रतियोगिता होती है।

प्रियम अंकित

अधिक जानकारी के लिए :
1. **The Sociology of Elites :** Michael Hartman, 2007, 2. **Super Class : The Global Power Elite and the World they are Making :** Devid Rothkopf, 2009

एलोरा

एलोरा या एल्लोरा (मूल नाम वेरुल) औरंगाबाद, महाराष्ट्र से करीब तीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पुरातात्विक स्थल है। इसे राष्ट्रकूट वंश के शासकों द्वारा बनवाया गया था। अपनी स्मारक गुफाओं के लिए प्रसिद्ध एलोरा यूनेस्को द्वारा 'विश्व धरोहर स्थल' में शामिल है। एलोरा स्थित पहाड़ी क्षेत्र में लगभग छठी-सातवीं शताब्दी ईसवी से ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी ईसवी तक की कई सौ गुफाएं हैं, जिनमें से 34 गुफाएं प्रसिद्ध हैं। पूरी दुनिया से पर्यटक इन्हें देखने आते हैं। इनमें गुफा संख्या एक से बारह तक बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। तेरह से उन्नीस तक हिंदू धर्म से और तीस से चौंतीस तक जैन धर्म से संबंधित हैं। ये सभी गुफाएं आस-पास बनी हुई हैं और अपने निर्माण काल से ही धार्मिक सौहार्द का प्रतीक रही हैं। जैसे अजंता की गुफाएं चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार एलोरा की गुफाएं मूर्तियों के लिए। दक्षिण और पश्चिमी भारत में पर्वत की खड़ी दीवार को काटकर गुफा मंदिर निर्माण का ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण गुप्त काल के उत्तरवर्ती युग में दूसरा नहीं है।

वास्तुनिर्माण की दृष्टि से दशावतार, रामेश्वर, सीता की नहानी और कैलाश किसी आश्चर्य से कम नहीं। कला समीक्षकों के अनुसार, कैलाश के परिवेश में समूचा ताज अपने आंगन समेत रख दिया जा सकता है। इतना ही नहीं, एथेंस का प्रसिद्ध मंदिर 'पार्थेन' भी

Scanned by CamScanner

इसके आयाम में समा जा सकता है। एलोरा भारतीय पाषाण शिल्प स्थापत्य कला का सार है। वस्तुतः यह प्राचीन भारतीय सभ्यता का जीवंत उदाहरण है। बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म को समर्पित एलोरा परिसर न केवल अद्वितीय कलात्मक सृजन और तकनीकी उत्कृष्टता का निदर्शन करता है, बल्कि यह प्राचीन भारत के धैर्यवान चरित्र की व्याख्या भी करता है।

पत्थरों को काटकर बनाई गई ये गुफाएं और मंदिर दुनिया भर में पत्थरों पर नक्काशी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। गुफा सोलह में दुनिया का सबसे विशालकाय स्तूप है, जो भगवान शिव को समर्पित है। कैलाश मंदिर के नाम से जानी जाने वाली इस गुफा को बनाने में लगभग डेढ़ सौ साल लगे। प्राचीन समय की यह बेहतरीन वास्तुकला है। एलोरा की गुफाएं सह्याद्रि पहाड़ी (कोंकणतटीय क्षेत्र और पश्चिमी घाट) क्षेत्र में आती हैं। यह पहाड़ गोदावरी नदी की लहरों से भी इन गुफाओं की रक्षा करता है। इन गुफाओं में लगी बुद्ध की मूर्तियां आज भी जीवंत लगती हैं। ऐसा लगता है कि बुद्ध हमें संदेश दे रहे हैं। सबसे पहले बुद्ध गुफाओं का ही निर्माण हुआ था। इसके बाद पांचवीं से सातवीं शताब्दी के बीच मठ, बहुमंजिला इमारतें और रहने के लिए आवास भी बनाए गए। हिंदू गुफाओं का निर्माण सातवीं शताब्दी के बाद शुरू हुआ। इन गुफाओं को बेहद कलात्मक तरीके से बनाया गया है। इन्हें देखकर लगता है कि कोई अब इन्हें बनाए तो सदियां लग जाएंगी, फिर भी इतनी बेहतरीन कलाकृति बनाना शायद संभव न हो पाए। जैन गुफाएं अन्य गुफाओं से छोटी हैं पर इनकी कलाकृति भी देखते ही बनती हैं। यहां जैन दर्शन और परंपरा को बेहतरीन तरीके से पत्थरों पर उकेरा गया है। ये गुफाएं सादगी का बेहतरीन उदाहरण हैं।

अभिलेख बताते हैं कि इन गुफाओं को देखने के लिए विभिन्न उत्साही यात्रियों के अलावा नियमित रूप से राजसी लोग भी आते रहे। इस क्रम में दसवीं सदी के अरब भूगोलवेत्ता, अल-मसूदी को सर्वप्रथम आगंतुक माना जाता है। 1352 ईसवी में सुल्तान हसन गंगू बहमनी की आगामी यात्रा के अवसर पर गुफाओं तक पहुंचने के रास्तों की मरम्मत की गई। इन गुफाओं को देखने वाले अन्य महत्वपूर्ण नामों में फिरिशता वनॉट (1633-67), निकोलोमनुक्की (1653-1708), चार्ल्स बारेमलेट (1794), सीले (1824) जैसे लोग शामिल हैं। उन्नीसवीं सदी के दौरान इन गुफाओं पर इंदौर के होल्कर्रों ने कब्जा कर लिया था। होल्कर्रों के बाद, इनका नियंत्रण हैदराबाद के निजाम को मिल गया। अब राज्यों के पुनर्गठन और पूर्ववर्ती निजामों के राज्य क्षेत्र को महाराष्ट्र में मिलाने के बाद ये गुफाएं महाराष्ट्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुरक्षणाधीन है।

जय कौशल

अधिक जानकारी के लिए :
1. **भारतीय स्थापत्य** : श्रीरंगकुमार झा, 2003, 2. **भारत के भवनों की कहानी** : भगवतशरण उपाध्याय, 3. **Unfolding a Mandala : The Buddhist Cave Temples at Ellora :** Geri Hockfield Malandra, 1993

एशियाई निरंकुशता

पश्चिमी सभ्यता में भी निरंकुश राजसत्ता रही है, पर कार्ल मार्क्स ने एशियाई उत्पादन प्रणाली पर चर्चा करते हुए खासकर भारत के संदर्भ में एशियाई निरंकुशता (Asiatic despotism) का मुद्दा उठाया था। उनकी नजर में 'एशियाटिक मोड ऑफ प्रोडक्शन' का मुख्य लक्षण है आत्मनिर्भर ग्राम समुदायों का होना, जिनमें कृषक और दस्तकारों की एकता होती थी और व्यक्तिगत संपत्ति का अभाव था। कृषक और दस्तकार जैसे लोहार, कुम्हार, बढ़ई आदि आपस में जरूरत की चीजें एक-दूसरे से पा जाते थे और उनका नगर से संबंध नहीं था। आत्मनिर्भर ग्राम समुदाय अपने भीतर भाईचारा, परस्पर सहयोग, सच्चाई जैसे उच्च गुणों के साथ स्वतःसंपूर्ण थे, अपरिवर्तनशील थे और सामाजिक स्थिरता के जनक थे। मार्क्स ने यह भी लिखा है कि दिल्ली को अकबर ने दुनिया का सबसे बड़ा और खूबसूरत नगर बना दिया, पर यह धारणा भी दी कि एशियाई नगर का उदय वहां होता है जहाँ व्यापारी नगर को मात्र विलासिता की चीजों को

Scanned by CamScanner

पर एक कानून बनाया। उनके नेतृत्व में पहला हिंदू विधवा पुनर्विवाह 7 दिसंबर 1856 को हुआ। उन्होंने स्कूलों के सरकारी निरीक्षक की हैसियत से 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की और बेथुन स्कूल के मंत्री के रूप में उच्च नारी-शिक्षा को बढ़ावा दिया। कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम के संपादन के सिलसिले में वे भारतेंदु हरिश्चंद्र से मिले थे और उनके निजी पुस्तकालय का उपयोग किया था।

उनमें भारतीय परंपरा और पाश्चात्य आधुनिकता के सर्वोत्तम और जीवनदायी तत्वों का समन्वय हुआ था। उनके पांडित्य के साथ-साथ उनकी सत्यनिष्ठा, उच्च चरित्र और उदारता ने उनके व्यक्तित्व को क्लासिकीय गरिमा प्रदान की। गरीबों और जरूरतमंद दुखी लोगों के प्रति उनकी सहानुभूति, सहायता और दानशीलता के किस्से समूचे बंगाल में प्रचलित हैं। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं था। उनका पहनावा बिल्कुल सादा था, उनका स्वभाव अत्यंत सरल और व्यवहार बेहद सादगी से भरा था। इसके साथ ही उनके उच्च नैतिक गुण और विशेष रूप से उनके स्वाभिमान ने उनके व्यक्तित्व को उदात्त और ओजस्वी बनाया था। उन्होंने सरकारी सेवा से त्यागपत्र देने में जरा भी संकोच नहीं किया क्योंकि वे अनुचित सरकारी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

ममता पांडेय

अधिक जानकारी के लिए :

1. **Vidyasagar—A Reassessment :** Gopal Haldar,
2. **Vidyasagar and Brahmanical Society :** Sumit Sarkar, 2008

ईसाई धर्म

ईसाई धर्म विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है। इसे मानने वाले ईसाई कहलाते हैं। यह एक ईश्वर में विश्वास करने वाला धर्म है। इसके अनुयायी ईसा मसीह की शिक्षाओं पर अमल करते हैं, जो इस धर्म के प्रवर्तक थे। ईसा मसीह (जीसस क्राइस्ट) का जन्म छठी ईसवी पूर्व रोमन साम्राज्य के गैलिली प्रांत के नजरथ नामक स्थान पर हुआ था। उनके यहूदी माता-पिता का नाम क्रमशः मेरी और जोजेफ था। कहते हैं ईसा मसीह के मेरी के गर्भ में आगमन के समय मेरी कुंवारी थी। इसलिए मेरी को ईसाई धर्मावलंबी 'वर्जिन मेरी' (कुंवारी मेरी) तथा ईसा मसीह को ईश्वरकृत दिव्य पुरुष मानते हैं। ईसा मसीह के जन्म के समय यहूदी लोग रोमन साम्राज्य के अधीन थे और उससे मुक्ति के लिए व्याकुल थे। उसी समय जॉन द बैप्टिस्ट नामक एक संत ने जॉर्डन घाटी में

एक भविष्यवाणी की थी कि यहूदियों की मुक्ति के लिए ईश्वर शीघ्र ही एक मसीहा भेजने वाला है। हिब्रू भाषा का ईसा शब्द येशूआ का विकृत रूप है, इसका अर्थ है मुक्तिदाता। यहूदी धर्म ग्रंथ में मसीहा ईश्वर प्रेरित मुक्तिदाता की पदवी है।

आमतौर पर यह स्वीकार किया गया है कि ईसा मसीह एक ऐतिहासिक पुरुष हैं, न कि मिथकीय चरित्र। यीशु अथवा ईसा के अनुयायी उन्हें 'चमत्कारी बालक' समझते थे। वे बारह वर्ष की अवस्था में यरुशलम आए और यहां उन्होंने कानून की पढ़ाई की, साथ ही परमेश्वर के बारे में ज्ञान अर्जित किया। उनकी तेरह से तीस साल के बीच की उम्र के बारे में निश्चित तौर पर जानकारी नहीं मिलती और सिर्फ

Scanned by CamScanner

धर्मगुरु हैं। रोमन कैथोलिक प्रतिष्ठान में किसी कनिष्ठ पुरोहित को ज्येष्ठ वर्ग में प्रवेश के लिए किया जाने वाला संस्कार 'आर्डिनेशन' कहलाता है।

ईसाई धर्म पांच शाखाओं में विभाजित है : दि चर्च ऑफ दि ईस्ट, ऑरियंटल आर्थोडॉक्सी, ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्सी, रोमन कैथोलिकवाद और प्रोटेस्टेंटवाद। इनमें प्रोटेस्टेंट मत का उदय सोलहवीं शताब्दी में एक सुधार आंदोलन के रूप में हुआ जिसका श्रेय मार्टिन लूथर को जाता है। वैसे ईसाई मत में समय-समय पर कई तरह के सुधार आंदोलन चलते रहे हैं। इस समय दुनिया में एक अरब दो करोड़ रोमन कैथोलिक हैं। 2016 की एक महत्वपूर्ण घटना है, जब रोमन कैथोलिकों के पोप और रूस के ऑर्थोडॉक्स चर्च के मुखिया सैकड़ों साल की दूरियां पाट कर हवाना में मिले और इन्होंने पुरानी कटुता भुला कर एक दूसरे का अभिवादन किया। यह भी एक घटना है, सैकड़ों साल पहले चर्च द्वारा वैज्ञानिक गैलिलियो को पीड़ित करने के फैसले को लेकर 1997 में पॉप जॉन पाल द्वितीय ने सार्वजनिक तौर पर माफी मांगी थी। उनमें यह साहस आया था।

भारत में ईसाई धर्म का प्रवेश अत्यंत प्राचीन काल में हो चुका था। ईसा मसीह के प्रमुख शिष्यों में से एक संत थामस ने प्रथम शताब्दी ईसवी में ही भारत में मद्रास के निकट आकर ईसाई धर्म का प्रचार किया था। उसी समय से इस क्षेत्र में ईसाई धर्म का स्वतंत्र रूप में प्रसार होता रहा है। सोलहवीं सदी में पुर्तगालियों के साथ आए रोमन कैथोलिक धर्म प्रचारकों के माध्यम से उनका संपर्क पोप के कैथोलिक चर्च से हुआ।

भारत के कुछ ईसाइयों ने पोप की सत्ता को अस्वीकृत करके 'जेकोबाइट' चर्च की स्थापना की। केरल में कैथोलिक चर्च से संबंधित तीन शाखाएं दिखाई देती हैं—सीरियन मलाबारी, सीरियन मालाकारी और लैटिन। रोमन कैथोलिक चर्च की लैटिन शाखा के भी दो वर्ग दिखाई पड़ते हैं—गोवा, मंगलोर, महाराष्ट्रियन समूह, जो पश्चिमी विचारों से प्रभावित रहा तथा तमिल समूह जो अपनी प्राचीन भाषा-संस्कृति से जुड़ा रहा। काका बेपतिस्टा, फादर स्टीफेंस (ख्रीस्ट पुराण के रचयिता), फादर दि नोबिली आदि दक्षिण भारत के प्रमुख ईसाई धर्म प्रचारक थे।

उत्तर भारत में अकबर के दरबार में सर्वधर्म सभा में विचार-विमर्श के लिए जेसुइट फादर उपस्थित थे। उन्होंने आगरा में एक चर्च भी स्थापित किया था। भारत में प्रोटेस्टेंट धर्म का आगमन 1706 में हुआ। बी जीगेनबाल्ग ने तमिलनाडु के ट्रंकबार में तथा विलियम कैरे ने कलकत्ता के निकट श्रीरामपुर में लूथरन चर्च स्थापित किया। विलियम कैरे जैसे ईसाई धर्म प्रचारकों ने बाइबिल आदि अंग्रेजी पुस्तकों के हिंदी अनुवाद यहीं प्रस्तुत किए। ईसाई धर्म अपनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रलोभन भी दिए गए। भारत में गरीबों, पीड़ित संप्रदायों जैसे दलितों और आदिवासियों के धर्मांतरण पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसलिए दलित और आदिवासी साहित्य में ईसाई धर्म से संबंधित प्रसंग मिल जाते हैं।

वर्तमान में भारत में ईसाई धर्मावलंबियों की संख्या लगभग 1 करोड़ 65 लाख है, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग 2.5 प्रतिशत है। प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि', प्रसाद के 'तितली' और यशपाल के 'मेरी तेरी उसकी बात' में ईसाइयत के संदर्भ देखे जा सकते हैं। फादर कामिल बुल्के ईसाई थे और उन्होंने हिंदी की बड़ी सेवा की।

जय कौशल

अधिक जानकारी के लिए :

1. **द बाइबिल : ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट**, 2. **Introducing Christianity** : Allen G Patgett, Sally Bruyneel, 2003, 3. **The Oxford History of Christian Worship** : Oxford University Press, 4. **Christianity : A Very Short Introduction** : Linda Woodhead, 2004

ईस्ट इंडिया कंपनी की भाषा नीति

ईस्ट इंडिया कंपनी का पहला जलपोत 1608 में सूरत पहुंचा। इसने 1613 में मुगल बादशाह जहांगीर से अनुमति हासिल कर इस नगर में अपने व्यापारिक भवन का निर्माण किया। औरंगजेब ने

Scanned by CamScanner

कंब रामायण

कंब रामायण तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना के रूप में विख्यात है। इसके रचयिता कंबन हैं। बारहवीं सदी के इस ग्रंथ में लगभग 10,050 पद हैं, जो छह कांडों में क्रमशः बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड और युद्धकांड में विभक्त हैं। उन्होंने उत्तरकांड का प्रसंग नहीं रखा क्योंकि उनकी रामायण राम के राज्याभिषेक पर समाप्त हो जाती है। परंपरा के विरुद्ध रामायण की मुक्ति राजदरबार में न होकर श्रीरंगम के पावन स्थल पर होती है। कंबन ने अपनी रचना को रामावतारम् तथा रामकथा की संज्ञा दी। प्रत्येक कांड पटलों में विभक्त है।

कंबन ने 'कंब रामायण' का कथानक 'वाल्मीकि रामायण' से लिया है, परंतु उन्होंने मूल 'रामायण' का अनुवाद अथवा छायानुवाद न करके, अपनी दृष्टि और मान्यता के अनुसार घटनाओं में सैकड़ों परिवर्तन किए हैं। उन्होंने तमिल संस्कृति, परंपरा तथा रीति-रिवाजों से बहुत कुछ ग्रहण किया। वाल्मीकि के अनुसार सुग्रीव ने बालि की विधवा से विवाह किया था, जबकि कंबन के अनुसार रत्नों तथा सौभाग्य के बिना वह माता जैसी लगती थीं। वाल्मीकि के अनुसार रावण ने सीता का हरण पंचवटी से किया, लेकिन कंबन के अनुसार रावण ने संपूर्ण आश्रम पृथ्वी पर से उठा लिया था। ब्रह्मा के शाप के कारण उसने सीता का स्पर्श नहीं किया। वाल्मीकि के अनुसार, रावण ने सीता को लंका में कैद रखा। कंबन एक बात और जोड़कर कहते हैं कि सीता लंकेश के हृदय में भी कैद थीं। कंबन ने राम तथा सीता के प्रथम प्रेम के उदय का वर्णन किया है जो राम-सीता के प्रथम साक्षात्कार के समय हुआ जब राम विश्वामित्र और लक्ष्मण के साथ मिथिला के मार्ग पर जा रहे थे। कंबन ने रचना में नैतिक मूल्यों का भी ध्यान रखा। कंब रामायण में उल्लेख मिलता है कि मंदोदरी ने रावण की मृत्यु से पहले ही रोते हुए मृत्यु का वरण कर लिया था। यानी वह विधवा नहीं हुई। इसका कारण था, रावण के अनैतिक कार्य से उपजा दुख। इसी प्रकार रामेश्वर में शिव स्थापना के समय पत्नी से वंचित राम का अनुष्ठान पूर्ण करवाने के लिए रावण सीता को ला कर स्वयं उनका पुरोहित बना। पूजन कार्य पूर्ण होने पर वह सीता को वापस ले गया। उनकी कृति वाल्मीकि की कृति से कहीं बृहदाकार है और बीस से भी ज्यादा तमिल छंदों में लिखी गई है, जबकि वाल्मीकि की रामायण अधिकांशतः श्लोकों में है।

कंबन के राजनीतिक विचार भी महत्वपूर्ण हैं। वह दो प्रकार के शासन का वर्णन करते हैं– पहला न्याययुक्त शासन जो सत्कार्यों पर आधारित होता है, दूसरा शक्ति का शासन जिसका आधार दुःसाहस होता है। अयोध्या में न्याययुक्त शासन था जबकि लंका में शक्ति का शासन था। न्याययुक्त शासक अपने मंत्रियों की मंत्रणा मानता है जबकि शक्ति का शासक उनकी उपेक्षा करता है। कंबन के अनुसार एक आदर्श शासक का उद्देश्य सबका हित होना चाहिए।

विविध परिस्थितियों के प्रस्तुतीकरण, घटनाओं के चित्रण, पात्रों के संवाद, प्राकृतिक दृश्यों के उपस्थापन तथा पात्रों की मनोभावनाओं आदि की अभिव्यक्ति में जगह-जगह कवि की मौलिक दृष्टि देखी जा सकती है। तमिल भाषा की संप्रेषणीयता को ध्यान में रखते हुए कंबन ने अनेक नए प्रयोग भी किए। इस दृष्टि से छंद विधान, अलंकार प्रयोग तथा शब्द नियोजन में कंबन ने अनुपम सौंदर्य की सृष्टि की है।

वाल्मीकि ने जहाँ राम के रूप में एक महामानव का चित्र उपस्थित किया, वहीं कंबन ने अपने युगादर्श के अनुरूप आदर्श महामानव के साथ राम को परमात्मा के अवतार के रूप में भी प्रतिष्ठित

Scanned by CamScanner

किया। कंबन के काव्य में राम एक तमिल नायक, एक उदार दाता और शत्रुओं के निर्मम विनाशक हैं। हिंदी में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना से न वी राजगोपालन द्वारा दो खंडों में कंब रामायण का अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

जय कौशल

अधिक जानकारी के लिए :

1. **कंब रामायण** : कंबन (अनु.) न वी राजगोपालन, 1998, 2. **तीन सौ रामायण :** ए के रामानुजन, 3. **Kamba Ramayana** : Kamban (English translation), P S Sundaram, 4. **A Comparative Study of Kamba Ramayanam and Tulsi Ramayan :** Madras University, 1971

कंस

कंस मथुरा के राजा उग्रसेन का ज्येष्ठ पुत्र था। वह मगधराज जरासंध का जामाता था। अपने श्वसुर जरासंध की तरह ही अपनी दुष्ट नीति के कारण उसकी कृष्ण और बलराम से सदा शत्रुता थी। अपने श्वसुर की सहायता और प्रलंब-बक असुरों की राय से उसने अपने पिता को बंदी बना लिया और स्वयं राजा बन बैठा था। वह बड़ा ही क्रूर था। कंस के चाचा की बेटी देवकी का विवाह वसुदेव से हुआ था। विवाह के बाद कंस जब देवकी और वसुदेव का मांगलिक रथ हांक रहा था, कथा है कि तभी आकाशवाणी हुई कि देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न बालक उसकी हत्या करेगा। कंस ने देवकी के सभी शिशुओं को मार डाला, पर आठवीं संतान को वसुदेव ने बचा लिया। कंस ने कृष्ण को मार डालने का लगातार प्रयत्न किया। धनुर्यज्ञ का स्वांग रचकर उसने कृष्ण और बलराम को अक्रूर से अपने रथ पर मथुरा बुलवाया था, परंतु कंस की अभिलाषा पूरी न हो सकी।

कृष्ण ने कंस को और बलराम ने अन्य आठ भाइयों को मार डाला। इनकी अंत्येष्टि राजा उग्रसेन ने की। सूरदास ने कृष्ण के दुष्टदलन वाले रूप को उभारने के लिए कंस का बार-बार जिक्र किया है, 'मथुरा के निकट चरति हैं गाई/दुष्ट कंस का भय करत मनहि मनहि ज्यों-ज्यों सुनै कृष्ण प्रभुताई।' उन्होंने कंस के आततायी चरित्र का चित्रण किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य 'द्वापर' में कंस के परंपरागत चरित्र के साथ कुछ नई कल्पनाओं का भी मेल किया है, 'द्वापर' का कंस अग्निधर्म का समर्थक है, जिसके अनुसार सब कुछ को जलाकर राख कर देना ही पुरुषार्थ है।

मंजुरानी सिंह

अधिक जानकारी के लिए :

Puranic Encyclopedia : Vattam Mani, 1975

कजरी

कजरी पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में गाया जानेवाला लोकगीत का एक प्रकार है। यह बरसात में गाई जाती है। कजरी शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द 'कज्जली' से है। अर्थ है काजल के रंग की, काली। इसका नाता कजरारी घटाओं से है। इन घटाओं को 'मेघदूत' में भिन्नाञ्जनाभा (अंजन के पिसे चिकने चूर्ण राशि) से व्यंजित किया गया है। ऐसी घटाओं की उमड़तीं-घुमड़तीं तमाम आकृतियां विशेष रूप से वर्षाकाल से जुड़ी हैं और कजरी इसी ऋतु का गाना है। भाद्रपद या भादों के कृष्णपक्ष की तृतीया को कज्जली तृतीया कहते हैं। इस दिन मिर्जापुर की विंध्यवासिनी देवी या काली माता की पूजा का विधान है। लगता है, इस पूजा के साथ गीत गाने का चलन रहा होगा, इसी से कजरी लोकगीत का विकास हुआ होगा। मिर्जापुर की कजरी मशहूर है। बनारस में कज्जली तृतीया की रात में चौराहों पर स्त्रियां दल बांध कर कजरी गाती हैं और सबेरे बड़ी-बड़ी गरम-गरम जलेबी खाई जाती हैं। भविष्योत्तर पुराण में कथा है कि एक बार देवसभा में विष्णु के सामने ही महाकाल शिव ने महाकाली को कज्जल सी काली कहकर मजाक किया जिससे अपमानित अनुभव करके

Scanned by CamScanner

कृत्तिवास रामायण

कृत्तिवास रामायण की रचना पंद्रहवीं शती के बांग्ला के आदि कवि कृत्तिवास ओझा ने की थी। यह संस्कृत के अतिरिक्त अन्य उत्तर-भारतीय भाषाओं की पहली 'रामायण' है। यह ग्रंथ मूल 'रामायण' का शब्दानुवाद नहीं है। इसमें मध्यकालीन बांग्ला समाज और संस्कृति का चित्रण भी है। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' के रचना काल से लगभग सौ वर्ष पूर्व 'कृत्तिवास रामायण' की रचना हुई थी। संत कृत्तिवास छंद, व्याकरण, ज्योतिष, धर्म और नीतिशास्त्र के प्रकांड पंडित थे और राम नाम में उनकी परम आस्था थी। 'कृत्तिवास रामायण' भी वाल्मीकि रामायण की तरह सात कांडों में विभाजित है। यह सरल पयार छंदों में पांचाली गान के रूप में लिखा गया है। कह सकते हैं कि 'कृत्तिवास रामायण' बंगभाषा-भाषियों का कंठहार है।

आशुतोष मुखर्जी के अनुसार, 'कृत्तिवास बंगाली जाति के बड़ो करिया गियाछेन'। इसका कथानक वाल्मीकीय रामायण के अनुरूप है, फिर भी अनेक जगहों पर पौराणिक ग्रंथों का पर्याप्त समावेश है, जिनमें 'योगाघार वंदना', 'शिवरामेर युद्ध' और 'रुक्मांगदेर एकादशी' प्रमुख हैं। गोस्वामी तुलसीदास के मानस की तुलना में आख्यानों का इतना अधिक उपयोग कृत्तिवास की अपनी विशेषता है। रामचरितमानसकार ने शिव-पार्वती के संवाद के रूप में कथारंभ किया है तो 'कृत्तिवास रामायण' में इक्ष्वाकु कुल के राजाओं का परिचय देते हुए कथा की शुरुआत की गई है। तुलसीदास के राम परमब्रह्म हैं, वे 'विधि हरि संभु नचावन हारे' हैं, जबकि कृत्तिवास के राम मुख्यतः विष्णु के अवतार हैं।

वस्तुतः बंगाल में तब पांचाली गायकों का प्रचार खूब था। स्वयं कृत्तिवास रामायण भी राम-पांचाली कहलाती थी। इसकी वर्णन शैली भी पांचाली साहित्य जैसी है। जगह-जगह भोजन, वनस्पतियों, वस्त्रों और वाद्यों की लंबी तालिकाएं दी गई हैं। जिस तरह हिंदी भाषी क्षेत्र में आल्हा का प्रचार है, उसी प्रकार कृत्तिवास रामायण में भी अनेक स्थलों पर युद्ध के लिए जाते वीरों के साथ विभिन्न वाद्य-यंत्रों एवं अस्त्र-शस्त्र का वर्णन किया गया है। इसे लंका कांड में देखा जा सकता है—'एक लक्ष दगड़, दुइ लक्ष करताल/दुइ सहस्र घंटा बाजे/मृदंग विशाल/ढेमचा खेमचा बाजे दुइ लक्ष ढोल/तिन लक्ष पखाओज बिस्तर मादल।'

कृत्तिवास का वर्णन साधारण नर-नारी के सुख-दुख का सहज वर्णन है। भाव-प्रकाशन पर न ब्रह्म तत्व हावी है, न मर्यादा हावी है। तुलसी के यहां भावात्मक संघर्ष अधिक है। इसी तरह, कृत्तिवासी रामायण में श्रृंगार के संयोग पक्ष का वर्णन उतना नहीं है, जितनी सुंदर अभिव्यक्ति वियोग पक्ष की है। तुलसी के यहां दोनों पक्ष अच्छे बन पड़े हैं। कृत्तिवास ने सीता के रूप-वर्णन में बहुत रुचि दिखाई है, जबकि तुलसी के यहां राम के वर्णन में सर्वाधिक रुचि है। इसी प्रकार कृत्तिवास रामायाण में वात्सल्य के वियोग पक्ष पर अधिक ध्यान दिया गया है तो तुलसी के यहां वात्सल्य के दोनों रूप देखे जा सकते हैं। रामचरितमानस की तुलना में कृत्तिवास रामायण में हास्य ज्यादा है, यद्यपि तुलसी के हास्य में शिष्टता है और कृत्तिवास के यहां विदूषकता है। इसमें तरुण वेश्याओं द्वारा ऋषि-श्रृंग को बुद्धू बनाने में हास्य का उपयोग है। उनके हनुमान में भी कहीं-कहीं मसखरापन दिखता है।

तुलसी की रामायण मूल-रूप में बहुत कुछ सुरक्षित है, लेकिन 'कृत्तिवास रामायण' में काफी परिवर्तन हुए। जिस तरह जगनिक का आल्हा काव्य लोक गायकों की जीभों पर घिसते-घिसते तथा नए-नए प्रसंगों को समाविष्ट करते हुए आज जिस रूप में उपलब्ध है वह मूल से बहुत भिन्न है, वैसी ही स्थिति 'कृत्तिवास रामायण' की है। कलाकारों ने 'कृत्तिवास रामायण' का गान करते समय भावावेश में आकर बहुत कुछ अपनी ओर से भी जोड़ा और तोड़ा-मरोड़ा है तथा अन्य प्रसिद्ध रामकथा-लेखकों की कृतियों के अंश भी उसमें सम्मिलित कर लिए हैं। यही कारण है कि इसके विभिन्न पाठ-भेद हैं।

हिंदी में भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा 'कृत्तिवास रामायण' का अनुवाद एवं प्रकाशन किया

Scanned by CamScanner

गया था। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की चर्चित रचना 'राम की शक्तिपूजा' कृत्तिवास रामायण से प्रेरित मानी जाती है।

जय कौशल

अधिक जानकारी के लिए :

1. **निराला की साहित्य-साधना (भाग-2) :** रामविलास शर्मा, 1972, 2. **कृत्तिवासी बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन :** रमानाथ त्रिपाठी, 3. **कृत्तिवास रामायण (हिंदी अनुवाद) :** योगेश्वर त्रिपाठी, प्रबोध कुमार मजुमदार, नवारुण वर्मा, 4. **मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति :** फणींद्रनाथ ओझा, 5. **तीन सौ रामायण :** ए के रामानुजन

कृषकों के मानवाधिकार

दुनिया की प्रायः 80 फीसद आबादी गांवों में निवास करती है। इस आबादी का अधिकांश कृषि कार्य से जुड़ा है। ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले दूसरे लोग भी इस आबादी में शामिल हैं। कृषक और कृषि कार्य से जुड़े लोग ही पूरे विश्व को भोजन मुहैया कराते हैं। कृषक ही असल में खाद्य सुरक्षा की कुंजी है, पर ये लोग ही भुखमरी, गरीबी और दमन के ज्यादा शिकार रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी की मार कृषकों पर सबसे अधिक है। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष में भी इनकी अहम भूमिका है। यही नहीं जैविक वैविध्य को बचाने तथा उसे संरक्षण प्रदान करने में भी कृषकों की महती भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। दुनिया को चलाने में इतनी बड़ी भूमिका निभाने वाले कृषकों के अधिकारों का लगातार उल्लंघन होता रहा है। उन्हें कई स्तरों पर भेदभावपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता है। आए दिन किसान खेती छोड़ जीवन यापन के दूसरे तरीके अपना रहा है। खेती से उसे लागत मूल्य की भी आमदनी नहीं हो पाती। उत्पादन संसाधनों की कमी उसे लगातार परेशान किए रहती है। यही नहीं दुनिया के तमाम देशों में किसान लगातार बेदखली का शिकार हो रहा है और कई बार विरोध जताने पर मार डाला जाता है। ऐसे में कृषकों की स्थिति बद से बदतर होती गई है। इस भयावह परिस्थिति से निपटने के लिए कृषकों के मानवाधिकार की बात पूरी दुनिया में उठने लगी। कई संगठन और आयोग अब कृषकों के मानवाधिकार की बात कर रहे हैं।

कृषकों के अधिकारों की चर्चा के क्रम में यह बात उठती रही है कि जमीन पर उनकी मिल्कियत को मान्यता मिलनी चाहिए। उन्हें सूचना और तकनीक के अधिकार से लैस होना चाहिए। साथ ही किसी उत्पाद का बाजार भाव तय करने का अधिकार भी उन्हीं को होना चाहिए। मौजूदा अंतरराष्ट्रीय कानून के मुताबिक अब यह जरूरी हो गया है कि कृषकों और ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले अन्य लोगों के अधिकारों को अमली जामा पहनाया जाए। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के निर्देशात्मक फाँक को भरा जाए और कृषकों के अधिकारों के नए मानदंड विकसित किए जाएं। सितंबर 2012 में मानवाधिकार आयोग ने बोलिविया, क्यूबा, इक्युआडोर और दक्षिण अफ्रीका के एक संयुक्त प्रस्ताव को पारित किया। इस प्रस्ताव में कृषकों और ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले अन्य लोगों के अधिकारों की घोषणा की गई। मानवाधिकार आयोग का यह निर्णय सीईटीआईएम, ला विया कैंमपेसिना और एफआईएएन इंटरनेशनल के लंबे संयुक्त प्रयास का नतीजा था। यह घोषणा वैश्विक स्तर पर लंबे समय के लिए कृषकों के अधिकारों तथा ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले अन्य लोगों के जीवन स्तर की बेहतरी को सुनिश्चित करने में सक्षम थी। कृषकों के साथ पारदर्शी और सामंजस्यपूर्ण व्यवहार से ही यह संभव था। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं

Scanned by CamScanner

॥ र ॥

रंगनाथ रामायण

रंगनाथ रामायण तेलुगु का पहला राम काव्य है। तेलुगु साहित्य में रामकथा को आरंभ से ही अग्र-स्थान मिला है। यही कारण है कि प्रबंध से लेकर द्विपद, शतक, वचन, यक्षगान, दंडक, पद, गीत, संकीर्तन और लोकगीतों तक में रामकथा मौजूद है। इसके बावजूद, रंगनाथ रामायण को तेलुगु की पहली पूर्ण रामकथा का दर्जा प्राप्त है। यह एक द्विपद-काव्य है। इस कृति का नाम 'रंगनाथ रामायण' है। इससे भ्रम हो जाता है कि इसका कवि रंगनाथ नाम का कोई आदमी रहा होगा। प्रमाणित हो चुका है कि इसकी रचना तेरहवीं सदी में राजा विट्ठलराजु के आदेशानुसार उनके पुत्र गोनबुद्ध रेड्डी द्वारा की गई थी। कवि ने स्वयं इसका उल्लेख काव्य के प्रारंभ में किया है। यह बात विभिन्न शिलालेखों से भी प्रमाणित है।

रंगनाथ रामायण की विशेषता है कि यह वाल्मीकि रामायण पर उतनी आधारित नहीं है, जितनी उस समय लोक में प्रचलित रामकथा पर। वाल्मीकि रामायण की कथा, चरित्र और भाव-व्यंजना इसमें स्थूल रूप में है, पर कवि ने बीच-बीच में ऐसे प्रसंग जोड़े हैं, जो कुछ अन्य ग्रंथों में हैं, जैसे—जंबुमाली का वृत्तांत, रावण से तिरस्कृत होकर विभीषण का अपनी माता के पास जाना, कैकसी (रावण की मां) का रावण को हितोपदेश, रावण का राम की धनुर्विद्या की प्रशंसा करना, गिलहरी की भक्ति, नारद का नागपाश में बद्ध होकर राम-लक्ष्मण के पास आना, रावण के आगे मंदोदरी का राम की महिमा और शौर्य की प्रशंसा करना, कालनेमि का वृत्तांत, सुलोचना का वृत्तांत, शुक्राचार्य के आगे रावण का दुखड़ा रोना, रावण का पाताल होम आदि। रंगनाथ रामायण की कुछ और विशेषताएं हैं, जो इसे अन्य रामायणों से अलग करती हैं। कवि ने दिखाया है कि इसके नायक राम जहाँ एक धीरोदात्त, वीर और सर्वगुणसंपन्न व्यक्ति थे, वहीं खलनायक रावण भी उदार, वीर, साहसी, बेहद पराक्रमी, राजनीति-पटु, स्वाभिमानी और शिव जी का अनन्य भक्त था। हालांकि वह कामुक, अभिमानी और उद्धत भी कम नहीं था। कवि ने रावण के कृष्ण पक्ष की निंदा की है, पर उसके उज्ज्वल पक्ष को उदारतापूर्वक दिखाया है। कवि की दृष्टि में रावण एक विलक्षण वीर था जिसमें जड़-चेतन और गुण-दोषों का एक खास ढंग का समन्वय था। उसके चेतन पर जड़ ने और गुणों पर दोषों ने अधिकार कर लिया था। इसलिए उसका पतन हुआ। रंगनाथ रामायण में रावण केवल अपने बल-पौरुष पर घमंड नहीं करता, यथास्थान वह अपने शत्रु राम की प्रशंसा भी करता है।

वाल्मीकि रामायण में मेघनाद की पत्नी सुलोचना का वृत्तांत नहीं है जबकि रंगनाथ रामायण में उसका भव्य चित्रण किया गया है। सुंदर नयनों वाली बहादुर सुलोचना शेषनाग की पुत्री थी। बांग्ला कवि माइकेल मधुसूदन दत्त ने अपनी रचना 'मेघनाद-वध' में सुलोचना को पर्याप्त स्थान दिया है। रंगनाथ रामायण के रचनाकार ने युद्धकांड में अ-वाल्मीकीय व्यंजना अधिक की है।

कला की दृष्टि से रंगनाथ रामायण उच्च कोटि का काव्य है। इसके रचनाकार संस्कृत काव्यशास्त्र में निष्णात होने के कारण उक्तिवैचित्र्य और अर्थगौरव का उचित अनुपात बनाए रखने में सफल हुए हैं। अनुप्रास और यमक अलंकारों की छटा, मुहावरों का प्रयोग और ओज, प्रसाद तथा माधुर्य गुणों से युक्त शैली कवि के अगाध पांडित्य और भाषा पर उसके अधिकार को द्योतित करती है। ऐसा भी जान पड़ता है कि कवि ने संस्कृत को कुछ देशीय रूप प्रदान करते हुए रामकथा को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है। उन्होंने देशी छंद द्विपद को सफलतापूर्वक अपना कर अन्य विषयों के लिए द्विपद रचना का

Scanned by CamScanner

मार्ग खोल दिया था। उसे गेय रूप देने में भी कवि को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। इस कथा के कुछ भाग 'तोलुवोम्म लाटा' (एक विशेष प्रकार की पुतलियों का नृत्य) जैसी लोक कला के कार्यक्रमों में गाए जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कवि गोनबुद्ध रेड्डी राम की अमर गाथा को तेलुगु हृदय तक पहुंचाने में किस प्रकार सफल हुए हैं।

जयकौशल

अधिक जानकारी के लिए :

1. **रंगनाथ रामायण** : गोनबुद्ध रेड्डी, (ए सी कामाक्षि राव का हिंदी अनुवाद), 1961, 2. **भारतीय साहित्य** : रामछबीला त्रिपाठी, 3. **तीन सौ रामायण** : ए के रामानुजन, 4. **तेलुगु साहित्य : संदर्भ और समीक्षा** : एस टी नरसिम्हाचारी, 5. **रामायण की अद्‌भुत कथाएं** : शांतिलाल नागर, सुरीति नागर

रंगभेद

रंगभेद (Apartheid) की धारणा करीब पांच सौ साल पुरानी है। यह यूरोपीय मस्तिष्क की देन है। इसके समर्थकों में वे पश्चिमी लोग रहे हैं, जिनकी त्वचा का रंग गुलाबी आभायुक्त सफेद है और जो श्रेष्ठता-दंभ से भरे रहे हैं। अफ्रीकी और एशियाई लोगों की त्वचा का रंग ऐसा न होने की वजह से वे अश्वेत या काले ही नहीं, हीन नस्ल के माने गए। यदि कलर्ड्स (Coloureds) का पहला अक्षर 'सी' कैपिटल हो तो इससे पश्चिमी अफ्रीका से लाए गए गुलामों के उन वंशजों का बोध होता है जो गुलाम मजदूरिनों और गोरों के संपर्क से जनमी संतानें हैं। भारत में ऐसी वर्णसंकर संतानों को एंग्लो-इंडियन कहा गया। अश्वेत लोगों को अवमानना से निगर, ब्लैक, नीग्रो, हब्शी आदि भी कहा जाता रहा है। उनके रंग को हीन ठहराते हुए ही ब्लैकमेल ब्लैक मार्केट जैसे शब्द भी बने। अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका वे मुख्य देश हैं, जहाँ नस्लवाद आधारित रंगभेद घृणा, हिंसा, जनसंहार और 'अलग-अलग विकास की नीति' का आधार रहा है। इसने कई जगहों पर गृहयुद्ध जैसी स्थिति पैदा की है।

1863 में अब्राहम लिंकन ने अमेरिका में गुलामी प्रथा समाप्त कर दी थी और दो सालों के भीतर 40 लाख काले गुलाम मुक्त कर दिए गए थे। फिर भी इस देश में लंबे समय तक काले लोग 'समान होते हुए भी अलग' के दृष्टिकोण से देखे जाते रहे हैं। सतरहवीं सदी से 1960 तक शिक्षा, आप्रवास, मताधिकार, जमीन की खरीद-बिक्री आदि मामलों में नस्लवाद के आधार पर भेदभाव कायम था। खासकर 1910 से 1970 के बीच बोस्टन, शिकागो, न्यू यॉर्क आदि बड़े शहरों में अफ्रीकी मूल के लोगों की संख्या काफी बढ़ गई, जो अमेरिका में बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों में ही काफी हो गई थी। अमेरिका में नस्लवाद सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के साथ आज भी अपने हिंसक रंग में दिखता है। यह बाल्टीमोर के दंगों (2014) और खासकर 2015 में चार्ल्सटन में काले लोगों के चर्च में घुस कर एक गोरे युवक द्वारा नौ लोगों की हत्या से स्पष्ट है। इसी साल कैलिफोर्निया में भी हिंसा हुई। अभी तक साउथ कैरोलिना, टेक्सास, जॉर्जिया आदि अमेरिकी राज्यों के अपने एक्स मार्का कनफेडरेट झंडे हैं, जो वर्ण-विद्वेष के प्रतीक हैं। 2007 के सर्वेक्षण के अनुसार, अमेरिका के एक-चौथाई गोरे लोगों ने माना है कि वे नस्लवाद के समर्थक हैं। हिटलर का नस्लवाद यदि यहूदी-विरोधी था, तो दुनिया में शरीर की चमड़ी के रंग के आधार पर किसी-न-किसी रूप में गोरे-काले का भेदभाव अब भी बना हुआ है।

रंगभेद के आधार पर पश्चिमी देशों में भी हिंसा बढ़ी है। इस पर बहस है कि क्या सिर्फ मुस्लिमों की हिंसा को ही आतंकवाद कहा जाए या अफ्रीकी अमेरिकियों और मुस्लिम अमेरिकियों पर गोरे व्यक्तियों के हमलों को आतंकवाद कहा जा सकता है? हाल का नजारा है कि अमेरिका ही नहीं, अन्य पश्चिमी देशों में आतंकवाद घृणा पर आधारित अपराध की कई शक्लों में है। इसके शिकार गोरे भी हैं और काले भी, क्योंकि आतंकवाद का कोई मजहब नहीं है।

अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग और दक्षिण

Scanned by CamScanner

प्रदेश, पंजाब, दिल्ली आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारी संगठन के प्रचार-प्रसार में उन्होंने खुद को खपा दिया। साथियों के लिए असीम कष्ट तक उठाने की उनकी मानसिक और शारीरिक क्षमता के सभी कायल थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक शिव वर्मा ने अपनी पुस्तक 'संस्मृतियां' में लिखा है, 'मैंने राजगुरु से स्पष्ट पूछा, क्या मौत से डर रहे हो? जो कुछ किया है, क्या उसके लिए पश्चात्ताप अनुभव कर रहे हो? मेरे सवाल पर राजगुरु पहले मुस्कुराया फिर गंभीर हो गया। उसने कहा—कम-से-कम तुमसे ऐसे सवाल की आशा न थी, प्रभात (लेखक का छद्मनाम)! मैं मौत से नहीं डरता, तुम अच्छी तरह जानते हो। मैं तो अपने अनुभव की बात कर रहा था।... गरीबी अभिशाप है और प्यार का अभाव नरक है। यह मेरी बाईस साल की जिंदगी के अनुभवों का निचोड़ है।'

अंग्रेजी अखबार फ्री प्रेस जर्नल ने 24 मार्च 1931 को फांसी की खबर देते हुए लिखा था, 'उनकी मृत्यु में उनकी जीत है, इसमें कोई संदेह नहीं है।... राष्ट्र की नजरों में भगत सिंह और उनके साथी आजादी की राह में हमेशा शहीदों के प्रतीक बनकर रहेंगे।'

लाल बहादुर वर्मा, महेश जायसवाल

शिवाजी

(1627-1680)

शिवाजी का जन्म 16 अप्रैल 1627 को शिवनेर के दुर्ग में हुआ था। उनके पिता का नाम शाहजी भोसले और माता का नाम जीजाबाई था। शिवाजी के जन्म के समय उनके पिता शाहजी भोसले बागी मुगल सरदार दरिया खाँ रोहिल्ला से युद्ध करने के लिए दक्षिण में गए थे। इसलिए वे पुत्र के जन्म की खुशियों में शामिल होने के लिए तुरंत शिवनेर नहीं आ सके। कुछ समय बाद शाहजी ने तुकाबाई से विवाह कर लिया और जीजाबाई के साथ शिवाजी को दादा कोंडदेव के संरक्षण में छोड़ दिया। इस तरह माता

शिवाजी

जीजाबाई और दादा कोंडदेव ने मिलकर शिवाजी के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की। उन्होंने शिवाजी के लिए धर्मशास्त्र, सैन्य और शासन प्रबंध की विशेष शिक्षा उपलब्ध कराई। शिवाजी पर महाराष्ट्र के लोकप्रिय संत रामदास और तुकाराम का भी प्रभाव था। रामदास शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे। उन्होंने शिवाजी को देशप्रेम के लिए प्रेरित किया था।

शिवाजी बारह साल के थे, तभी उनके पिता की ओर से पूना की जागीर मिल गई थी। 1641 में उनका विवाह सईबाई निम्बालकर से हुआ। शिवाजी का शुरुआती कार्य-क्षेत्र मालवा प्रदेश था। उन्होंने मालवा के परिश्रमी नवयुवकों को एकत्रित कर पूना के आसपास के किलों को छीनना प्रारंभ कर दिया। लेकिन जब शिवाजी ने अहमदनगर और बीजापुर को पतनोन्मुख अवस्था में देखा तो उनके मन में एक स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करने की इच्छा जाग्रत हुई। इस क्रम में उन्होंने सबसे पहले बीजापुर के तोरण दुर्ग पर आक्रमण किया, जहाँ उन्हें भारी खजाना मिला। इससे उन्होंने अपनी सेना बढ़ाई। शिवाजी ने आसपास के दूसरे किलों पर भी फतह की। 1657 में औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण

Scanned by CamScanner

अतिशयोक्तियुक्त ओजस्वी शैली में एक वीर नायक के रूप में शिवाजी का प्रशस्तिगान किया।

आधुनिक युग में भी शिवाजी एक राष्ट्रीय प्रेरणा रहे हैं। उन पर ज्योतिबा फुले ने 'पंवाड़ा' लिखा है और उनके संघर्षशील जीवन का वर्णन किया है। भारतेंदु के समकालीन अंबिका दत्त व्यास ने संस्कृत में 'शिवराजविजय' नाम से एक उपन्यास शिवाजी के जीवन पर लिखा है। निराला की 'महाराज शिवाजी का पत्र' कविता प्रसिद्ध है। रमेशचंद्र मजुमदार ने कहा है, 'भारतीय इतिहास के रंगमंच पर शिवाजी का अभिनय केवल एक कुशल सेनानायक और विजेता का ही न था, वह एक उच्च श्रेणी के शासक भी थे।'

जय कौशल

शिवि

शिवि एक जगह प्रह्लाद का भतीजा बताए गए हैं अर्थात वे दैत्यकुल के थे। वह बड़े धैर्यवान और दानी थे। उन्होंने राजर्षि पद पाया था अर्थात वह राजा थे और ऋषि के पद तक पहुंच गए थे। कहा जाता है, एक बार भगवान ने उनकी परीक्षा ली। उन्होंने ब्राह्मण वेश में शिवि के पास जाकर कहा कि वह भूखे हैं और उन्हें उनके बेटे का ही मांस खाना है, पकाकर दो। शिवि ने बेटे को मारा, उसका मांस पकाया और ब्राह्मण को खोजने लगा। ब्राह्मण ने कहा, अब इसे तुम खुद खाओ। शिवि अशांत हुए बिना आदेश का पालन करने जा ही रहे थे कि ब्राह्मण ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, तुमने क्रोध पर विजय पा ली है। परीक्षा पूरी हुई, शिवि का बेटा देवकुमार बनकर जी उठा। यह दैत्य से देवांतर अर्थात कुल-परिवर्तन की कथा है। इसे प्राचीन संस्कृतीकरण कहा जा सकता है।

शिवि के दान से जुड़ी एक और अन्य कथा है। एक दिन एक बाज किसी कबूतर को दौड़ा रहा था। कबूतर भागता हुआ शिवि के पास पहुंचा, पीछे-पीछे बाज भी। बाज ने शिवि से कहा कि यह मेरा शिकार है, मुझे सौंप दो। शिवि ने कहा, इसके बराबर तुम मेरा मांस खा लो और इसे छोड़ दो। बाज राजी हो गया। शिवि ने तराजू मंगाया और तलवार से अपनी जांघ का मांस काटकर रखा। बाज दूसरे पलड़े पर भारी था। राजा शिवि अपना एक-एक अंग काटकर तराजू के पलड़े पर रखते जा रहे थे। अंत में उन्होंने अपने आपको संपूर्णतः पलड़े पर रख दिया। तभी भगवान बाज का रूप छोड़कर प्रकट हुए। उन्होंने शिवि को पूर्ववत कर दिया और कहा कि उनके समान दानी कोई नहीं है। ऐसी कथाएं मनुष्य को मार्ग दिखाने के लिए थीं कि त्याग ही मनुष्य को श्रेष्ठता तक पहुंचाता है।

सुमिता गुप्ता

शिशुपाल

शिशुपाल चेदिराज दमघोष और वसुदेव की बहन श्रुतश्रवा का बेटा था। विष्णुपुराण के अनुसार विष्णु के दो द्वारपालों जय-विजय ने सनकादिक मुनि के शाप के कारण द्वापर युग में शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में तीसरा जन्म लिया था। पहले जन्म में ये हिरण्याक्ष-हिरण्यकश्यप और दूसरे जन्म में रावण-कुंभकर्ण के रूप में पैदा हुए थे। हर जन्म में विष्णु के अवतारों के द्वारा ही उन्हें मुक्ति मिली।

श्रीमद्भागवत पुराण और महाभारत में शिशुपाल के जन्म और मृत्यु का वर्णन है। वह तीन आंखों, चार हाथों के साथ, गधे की तरह चिल्लाते हुए पैदा हुआ था। आकाशवाणी हुई कि जिस व्यक्ति की गोद में उसके अतिरिक्त अंग झड़ जाएंगे उसी के हाथों वह मारा जाएगा। ममेरे भाई कृष्ण की गोद में जाकर शिशुपाल स्वाभाविक हुआ। उसकी माता ने कृष्ण से अपने बेटे को न मारने का वचन मांगा। कृष्ण ने उसकी सौ गलतियां माफ करने का वचन दिया, राज्य पाने के बाद शिशुपाल अत्याचारी हो

Scanned by CamScanner

पटह, डिंडिम आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है। एक समय बाद शिव को विभिन्न रेचकों और अंगहारों के साथ तांडव नृत्य करते देखकर पार्वती भी सुकुमार भाव से लास्य नृत्य करने लगती है। इस तरह शिव धारा से कला का एक खास संबंध स्थापित हो जाता है। कृष्ण नटवर हैं तो शिव नटराज हैं। विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' नाटक और धनंजय ने काव्यशास्त्र के ग्रंथ 'दशरूपक' में तांडव-रत शिव की स्तुति की है। तांडव का विध्वंसपरक अर्थ आमतौर पर अधिक प्रचलित है। यह वीरोचित भावना को दर्शाता है। लेकिन शास्त्रों में इसे आनंद में मग्न कर देनेवाली कला के रूप में भी देखा गया है। खासकर शैव परंपरा के ग्रंथों में दिखाया गया है कि आनंदमय लय में शिव का तांडव देखकर नारद आदि महर्षि ब्रह्मानंद के समान अनिर्वचनीय आनंद पाते हैं (बोधसार, शिवपूजाशतक)। तांडव नृत्य से सृष्टि, सृष्टि का कल्याण और संहार तीनों अर्थ का बोध होता है। 'कामायनी' में प्रसाद ने लिखा है, 'आनंदपूर्ण तांडव सुंदर, झरते थे उज्ज्वल श्रम सीकर'।

शंभुनाथ

अधिक जानकारी के लिए :

1. **संक्षिप्त नाट्यशास्त्र : भरत** : राधावल्लभ त्रिपाठी (सं.),
2. **Dance Dialects of India** : Ragini Devi, 1990,
3. **The Dance of Shiva** : Anand K Coomaraswamy, 1957

ताजमहल

दुनिया के सात अजूबों में एक गिना जाने वाला आगरा का 'ताजमहल' भारत की शान और प्रेम का प्रतीक चिह्न माना जाता है। स्थापत्य कला की जीती-जागती तस्वीर इस इमारत को मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी दूसरी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया था। इसका निर्माण मुमताज की मौत के बाद 1632 में शुरू हुआ और 1653 के आसपास कोई इक्कीसवीं सालों में पूरा हुआ। लगभग बीस हजार शिल्पकारों और कारीगरों ने मिलकर इस इमारत की बारीक कारीगरी और जड़ाऊ काम के साथ-साथ बाग-बगीचों का निर्माण किया। इसका मुख्य गुंबद 60 फुट ऊंचा और 80 फुट चौड़ा है। इसके मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी या उस्ताद ईसा थे। इस इमारत पर काम करने वाले दूसरे कारीगर थे—ईरान में शिराज के अमानत खान जो मुख्य सुलेखक थे। दिल्ली के चिरंजीलाल, जो कीमती पत्थरों के विशेषज्ञ थे, मुख्य सजावटी मूर्तिकार थे। मुहम्मद हनीफ राजगीरों के मुख्य पर्यवेक्षक थे। अब्दुल करीम मैमूर खान और मकरामत खान निर्माण स्थल पर दैनिक निर्माण का आर्थिक प्रबंध देखते थे। निर्माण स्थल पर 1000 से ज्यादा हाथियों को आवश्यक सामग्री, संगमरमर के ब्लॉक और अन्य सामान ढोने के काम में लगाया गया था। लगभग 28 प्रकार के कीमती पत्थरों का इस्तेमाल कब्र के अंदर जड़ाऊ के काम में किया गया। इन पत्थरों में अफगानिस्तान से लापीस लजुली, श्रीलंका से नीलम, तिब्बत से फिरोजा, चीन से जेड और क्रिस्टल, अरब से कार्नेलियन और पंजाब से जैस्पर शामिल हैं। राजस्थान के मकराना से सफेद संगमरमर लाया गया।

विद्वानों के अनुसार उस समय के हिसाब से ताजमहल के निर्माण की कुल लागत लगभग 3.2 करोड़ रुपए थी। 1920 में ताजमहल को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक और 1983 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। बाद में ताजमहल से प्रेरित कुछ अन्य इमारतें भी बनाई गईं, जैसे—महाराष्ट्र के औरंगाबाद में बीबी का मकबरा, बांग्लादेश में ढाका के पास सोनारगांव में 2008 में बनी ताजमहल की प्रतिकृति, विस्कॉन्सिन में त्रिपोली

Scanned by CamScanner

मंदिर जो कोई धार्मिक इमारत नहीं है बल्कि मूरों की पुनरुद्धार वास्तुकला का उदाहरण है। अमेरिका के अटलांटा शहर में बना ट्रंप ताजमहल एक कैसीनो है। कहते हैं ताजमहल मांडू (मध्यप्रदेश) स्थित सुल्तान होशंगशाह के मकबरे की डिजाइन देखकर बनाया गया था क्योंकि इस मकबरे के द्वार पर एक लेख अंकित है, जिसके अनुसार शाहजहां ने अपने प्रमुख वास्तुकार को इस मकबरे की निर्माण शैली देखने माण्डू भेजा था। इस मकबरे के नीचे जिस प्रकार कब्र पर एक-एक बूंद पानी गिरता है, उसका अनुकरण भी ताजमहल से मिलता है। कला इतिहासकार वेन बेगले ने इसे मुमताज के प्यार की यादगार के बजाय ईश्वरीय सिंहासन और बहिश्त की प्रतिकृति माना है। बहिश्त के सांकेतिक चित्रण की शुरुआत हुमायूं के मकबरे से हुई थी, ताजमहल उसी की पराकाष्ठा है।

गौरतलब है कि शाहजहां को उनके बेटे औरंगजेब ने ताजमहल का निर्माण पूरा होने के बाद 1654 में गद्दी से हटा दिया था। शाहजहां ने 1666 में मृत्यु तक अपनी जिंदगी के आखिरी दस साल आगरा किले में एक कैदी के तौर पर यमुना नदी के पार अपने खोए प्यार की याद में बनवाई इमारत देखकर गुजारे। जब 1666 में शाहजहां की मौत हुई तो औरंगजेब ने उन्हें उनकी मुहब्बत मुमताज की कब्र के बगल में दफना दिया ताकि वे मरने के बाद भी एक साथ रह सकें।

यमुना नदी के किनारे सफेद पत्थरों से निर्मित स्थापत्य कला का प्रतिमान 'ताजमहल' न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुका है। प्यार की इस निशानी को देखने के लिए दूर देशों से हजारों सैलानी यहां आते हैं। दूधिया चांदनी में नहा रहे ताजमहल की खूबसूरती तमाम उपमाओं को पीछे छोड़ देती है।

इतिहास, चित्रकारी और स्थापत्य-कला में ताजमहल की जितनी प्रतिष्ठा है, उसके अनुरूप साहित्य में भी उसे उचित मान मिला है। उर्दू, हिंदी से लेकर भारत की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं के साहित्य में ताजमहल को प्रेम के प्रतीक सहित कई अन्य रूपों में भी अभिव्यक्त किया गया है। शायद ही कोई ऐसी विधा बची हो, जिसमें ताजमहल का उल्लेख न हुआ हो। उर्दू शायरी में तो गालिब, मीर, कैफी आजमी, साहिर लुधियानवी से लेकर समकालीन शायरों तक ने ताजमहल का जिक्र प्रेम के संदर्भ में किया है।

साहिर ने प्रगतिवाद के जोश में लिखा था, 'एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल/हम गरीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक'। इसलिए महबूब ने माशूका से कहीं और मिलने को कहा–'मेरी मेहबूब कहीं और मिला कर मुझसे।' इसकी तीखी आलोचना करते हुए रामविलास शर्मा ने याद दिलाया था कि ताजमहल बादशाहों की नहीं, शिल्पियों और श्रमिकों की महान उपलब्धि है, हमें उसके उत्तराधिकार पर गर्व करना चाहिए, शर्म नहीं। सुमित्रानंदन पंत ने भी ताजमहल के प्रति कुछ ऐसे ही भाव व्यक्त किए थे, 'हाय! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन...। स्फटिक सौध में हो श्रृंगार मरण का शोभन।'

रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी सुप्रसिद्ध कविता 'शाह जेहान' में ताजमहल को काल के कपोल पर आंसू की एक उजली बूंद (एक बिंदु नमनेर जल/कालेर कपोल तले शुभ्र समुज्ज्वल / ए ताजमहल) और एक सम्राट कवि का नया मेघदूत कहा था। केदारनाथ अग्रवाल अपनी कविताओं में 'ताजमहल' पर लिख चुके हैं। अज्ञेय की एक चर्चित कविता है 'ताजमहल की छाया में'। उन्होंने लिखा है, 'मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है मैं कविता कर पाऊं/या कूंची में रंगों ही का स्वर्ण-वितान बनाऊं/साधन इतने नहीं कि पत्थर के प्रासाद खड़े कर/तेरा, अपना और प्यार का नाम अमर कर जाऊं।' इसी तरह हरिवंशराय बच्चन के यहां देखें, 'सज गई धरा/सज गया गगन का यह कोना/जमुना के तट पर अटक गया बहते-बहते/जैसे कोई टटके उजले पूजा के फूलों का दोना'। कवि को ताजमहल 'उजले फूलों का दोना' के रूप में दिखाई दे रहा है। बालस्वरूप राही ने 'सपने ताजमहल के हैं' शीर्षक से एक गीत लिखा था।

जयकौशल

अधिक जानकारी के लिए :
भारतीय स्थापत्य : श्रीरंग कुमार झा, 2003

Scanned by CamScanner

अधिक जानकारी के लिए :
1. **Nagarjuna in Context : Mahayana Buddhism and Early Indian Culture** : Joseph Walser, 2005,
2. **Buddhism in India** : Gail Omvedt, 2003

त्रिपुर

महाभारत की कथा के अनुसार मय नामक असुर ने द्युलोक अंतरिक्ष और भूलोक में क्रमशः सोने, चांदी और लोहे से तीन पुरों निर्माण किया। तीन पुरों में तारकासुर के तीन दैत्य पुत्र तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्याली रहते थे। इन्होंने शिव से वरदान पा लिया था कि तीनों एक साथ ही मारे जा सकेंगे और तीनों ही तीन पुरों में इतने अलग-अलग रहने लगे कि कभी मारे नहीं जा सकें और तीनों पृथक-पृथक नगरों में हर तरह के सुख भोगें। तीनों पुर हजार साल में एख बार ही मिलेंगे और उस समय एक बाण से मारने वाला देवेश्वर ही उनके विनाश का कारण बन पाएगा। तीनों दैत्यों ने तीनों नगर में एक-एक ऐसा अमृत सरोवर बना लेने का वरदान भी पा लिया, जिससे स्नान करके मृत राक्षस जीवित किए जा सकेंगे। वरदान के बाद दैत्यों ने अत्याचार करना शुरु कर दिया। इससे देवता त्रस्त होकर शिव के पास पहुंचे। उन्होंने सभी देवताओं से शक्ति ली और मायावी ढंग से एक ही अस्त्र से त्रिपुर को ध्वस्त किया और तीनों राक्षसों का वध कर दिया। श्रीमद्भागवत की कथा के अनुसार शिव वध में असफल हो गए थे। इसलिए कृष्ण और ब्रह्मा गौ और बछड़ा बनकर तीनों पुर गए और उन्होंने सरोवरों का सारा अमृत पी लिया। इसके बाद शिव ने त्रिपुर को जला दिया। शिव पुराण की कथा के अनुसार विष्णु ने एक षड्यंत्र किया, जिसकी वजह से त्रिपुरवासी शिवभक्ति छोड़कर एक अधार्मिक ग्रंथ को मानने लगे। फलतः शिव ने पशुपतिशास्त्र द्वारा उन तीनों पुरों को आध्यात्मिक शक्ति से इकट्ठा किया, फिर एक ही दिव्य बाण से त्रिपुर को भस्म कर तीनों दैत्यों को मार डाला, इससे वह महादेव कहलाए।

संजय जायसवाल

त्रिपुरा

भू-प्रदेश : त्रिपुरा भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित सात राज्यों में एक है, जो क्षेत्र की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल 10491.69 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम में बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय सीमा लगभग 856 किमी तक फैली है और पूर्वी भाग में मिजोरम और असम राज्य है। यह 22.55 डिग्री एवं 24.32 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 90.09 एवं 92.20 डिग्री पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसकी अधिकतम लंबाई 183.5 किमी तथा अधिकतम चौड़ाई 112.7 किमी है। इसकी भू-आकृति पहाड़ी, घाटी, चौरस मैदान और ढाल से निर्मित हुई है। इसकी चौड़ी घाटियों में अगरतला-उदयपुर-सरबम प्रमुख है। त्रिपुरा की राजधानी अगरतला है। त्रिपुरा में चार जिले हैं धलाई, उत्तरी त्रिपुरा, दक्षिणी त्रिपुरा और पश्चिम त्रिपुरा।

Scanned by CamScanner

पैलेस, कुंजवन पैलेस, जगन्नाथ मंदिर, चतुर्दश मंदिर, ब्रह्मकुंड, तीर्थमुख, जंपुई हिल, उनाकोटि तीर्थ, पंचअर्थल, त्रिपुरसुंदरी मंदिर, नीरमहल आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। इसके साथ ही भुवनेश्वर मंदिर, सिपाहीजिला, कमलासागर, देवतामुरा एवं डंबूर झील भी पर्यटकों के लिए आकर्षण के केंद्र हैं। अगरतला में बौद्ध मठ भी है, जहां बौद्ध बड़ी श्रद्धा के साथ जाते हैं। पेचारथल, कंचनपुर, मानुबकुल, पिलक एवं बाक्सनगर भी दर्शनीय स्थानों में शामिल हैं।

यातायात : त्रिपुरा की परिवहन एवं संचार व्यवस्था अपनी भौगोलिक बनावट को देखते हुए थोड़ी कठिन है। यह राज्य राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा असम से जुड़ा है। यह एक मात्र सड़क है जो इसे शेष भारत से जोड़ती है। यह पहाड़ी इलाकों से गुजरती हुई असम के कछार जिले तक जाती है। यहां सड़कों की लंबाई कुल 7000 किमी है, 4000 के आसपास पक्की सड़कें हैं। इसके कुमारघाट को मीटर गेज रेल लाइन द्वारा असम के दक्षिणी छोर करीमगंज से जोड़ दिया गया है। उत्तर-पूर्व में अवस्थित धर्मनगर राज्य का एकमात्र ऐसा शहर है जो रेल मार्ग से जुड़ा है।

जय कौशल

अधिक जानकारी के लिए :

1. **आदिवासी जनजातीय लोककथाएं** : दिनेश कंडवाल,
2. **आदिवासी साहित्य यात्रा** : रमणिका गुप्त (संपा.)

त्रिशंकु

वाल्मीकि रामायण (बाल कांड) में त्रिशंकु की कथा है। त्रिशंकु सूर्यवंशीय राजा थे। वे सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे। पहले कुलगुरु वसिष्ठ और बाद में उनके बेटों से उन्होंने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। वसिष्ठ के बेटों ने गुस्से में उन्हें शाप देकर चांडाल बना दिया। उनके आग्रह से पसीज कर ऋषि विश्वामित्र ने उन्हें अपनी तपस्या के बल पर स्वर्ग भेजने का वचन दिया। विश्वामित्र ने यज्ञ शुरू किया और त्रिशंकु को अपने मंत्रों के सहारे स्वर्ग भेजने लगे, लेकिन इंद्र और दूसरे देवताओं ने उन्हें स्वर्ग में घुसने नहीं दिया। त्रिशंकु नीचे धरती की ओर मुंह किए हुए नीचे उतरने लगे। इस पर गुस्से में आकर विश्वामित्र ने आकाश के दाहिने तरफ एक दूसरा सप्तऋर्षिमंडल और नक्षत्रलोक बना दिया। त्रिशंकु धरती और आकाश के बीच झूलते रह गए।

आम बातचीत में त्रिशंकु उस आदमी को कहा जाता है, जो दो विरोधी स्थितियों के बीच फंसा हो। वह कोई ठीक फैसला नहीं ले पा रहा हो। कई बार त्रिशंकु संसद और त्रिशंकु विधान सभा की दशा बनती है, जब किसी भी राजनीतिक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता। 'अज्ञेय' के एक निबंध संग्रह का नाम 'त्रिशंकु' है। मन्नू भंडारी की इस नाम से एक कहानी है। इसमें परंपरा और प्रगतिशीलता के बीच झूलते हुए आम आदमी की नियति पर व्यंग्य है।

गीता दूबे

Scanned by CamScanner